ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आरे बाधस्व दुच्छुनाम्। सामवेद-627

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमें दुष्प्रवृत्तियों से दूर हटाइए।

O the Luminous lord! keep us away from doglike habits such as greediness, quarriling and flattery etc.

वर्ष 38, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 सितम्बर, 2015 से रविवार 20 सितम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सीरिया से पलायन
यूरोपीय देशों को चेतावनी!!
संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए अपना हित-अहित भी सोचें-समझें

आज भले ही यूरोपीय देश मानवीय संवेदनाओं में बहकर इन लोगों को इस धार्मिक उन्माद की कीचड़ से बाहर निकाल ले, पर जिनके अन्दर स्वयं ही कीचड़ भरी हो उसे कौन निकालेगा? क्योंकि उन्मादी वैचारिक कचरा कहीं भी शान्ति से जीने नहीं देता!

जब कोई मजहब मानव जीवन पर संपूर्ण अधिकार कर ले या करने की प्रवृत्ति रखे, तो उसमें कोई आध्यामिकता नहीं रहती। वह पूर्णतः एक तानाशाही राजनैतिक दानवता पूर्ण कृत्यों का राष्ट्र रह जाता है। क्योंकि लोग स्वत्रंता पूर्वक जीने का हक मांगते है और यह दानव अपनी सारी शक्ति सर्वाधिकारी सत्ता बनाये रखने में लगाये रहते हैं। आज सीरिया का संकट भी कुछ ऐसा ही है! खाड़ी देशों को देखें तो वे अपने दरवाजे बंद कर यूरोपीय समुदाय को कुर्दी शरणार्थियों को शरण देने की दुहाई दे रहे हैं। खुद अपने दरवाजे इन्सानियत के लिये बंद कर लिये हैं। इन खाड़ी देशों में सीरियाई शरणार्थियों को जगह मिल सकती है लेकिन इन्होंने इस बारे में दुनिया की अपील यह कहकर ठुकरा दी कि हम सिर्फ उन लोगों को शरण दे सकते हैं जो हमारी संस्कृति के बारे में पूर्ण रुप से जानकार होंगे। अजीब विडम्बना यह है कि ये देश इस्लामिक जेहादियों, आतंकियों की मदद तो कर सकते हैं परन्तु मानवता की मदद करना इनकी संस्कृति के खिलाफ हो जाता है। यदि कोई सीरिया के इस संकट पर मुझसे पूछे तो यह इस्लाम द्वारा मुस्लिम जनता में नैतिकता को हानि पहुँचाने का कोई बड़ा उदाहरण नहीं है इससे पहले भी कई जंगें हो चुकी हैं कहने का तात्पर्य यह है कि कहीं ऐसा न हो कि इस अरबी प्रायदीप की ये आपसी जंग यूरोप के भविष्य की शान्ति न भंग कर दे!

इस सारे घटनाक्रम पर प्रसिद्ध सीरियाई लेखिका डॉ. वफा सुल्तान कहती हैं, कि यह सारी सच्चाई अभी अमरीकी, यूरोपीय देश पूरी तरह नहीं समझ सकते। लेकिन जब चीखें उनके घर से निकलेगीं तब समझ आयेगा क्योंकि ऐसा नहीं है कि इस इस्लामिक विघटन का अंदाजा मुस्लिम समाज को नहीं है। पर वो लोग आज जानबूझकर अपनी गलती महसूस करने में असर्मथ है और जो मुस्लिम इस दुनिया में हैं, वो यह अन्तिम सत्य मानकर चलते हैं कि नमाज पढ़ने , रोजा रखने और कुरान पढ़ने फतवे जारी करने के अलावा उनकी और कोई जिम्मेदारी नहीं है। इस्लाम के नाम पर हत्या करने का इनाम केवल जन्नत है और इसके अलावा सब काम बेकार है। आज भले ही यूरोपीय देश मानवीय संवेदनाओं में बहकर इन लोगों को इस धार्मिक उन्माद की कीचड़ से बाहर निकाल ले, पर जिनके अन्दर स्वयं ही कीचड़ भरी हो उसे कौन निकालेगा? क्योंकि उन्मादी वैचारिक कचरा कहीं भी शान्ति से जीने नहीं देता! आज सीरिया के इस भयंकर नरसंहार पर दुनिया का थानेदार अमेरिका फिलहाल चुप है कारण उसका अपना हित! क्योंकि अमेरिका एक ऐसा मुल्क है जो आतंक के खात्मे के नाम पर अपना हमेशा अपना हित तलाशता है , या तो सीरिया में तेल कम है या फिर उसका यहां हथियारों का अपना व्यापारिक हित सध रहा है । लेकिन कुछ भी हो यदि ये सारा प्रसंग मानवीय दृष्टिकोण से देखा जाये तो कहीं न कहीं मानवीय मूल्यों की त्रासदी है। 4 लाख के करीब लोग यूरोपीय देशों में शरण लेने को मजबूर हैं और आगे भविष्य में यहीं संकट यूरोप के सामने खड़ा होगा क्योंकि मानवीय नैतिकता और इस्लाम की आतंकी परिभाषा का विपरीत सम्बन्ध है। अपने जन्म से ही इस्लाम मुख्तः दूसरों पर हमले उनकी लूट, उन्हें मुसलमान बनने का निमंत्रण देना और न मानने पर खत्म कर देना यही चला आ रहा है। आप आज सीरिया, इराक का संकट देखें तो दोनों तरफ एक मजहब को ही मानने वाले लोग हैं पर एक पक्ष जबरन दूसरे के ऊपर 1400 साल पुरानी सभ्यता थोपना चाहता है। इसके लिये न इन्हें अपने परिवारों की चिंता है न नैतिक मूल्यों की। चिन्ता है तो पैगंबर की इज्जत, उसकी ताकत, उसके राज्य का विस्तार करना है जिसके लिए वे किसी भी हद से गुजर सकते हैं। इसका ताजा उदाहरण जर्मनी में गये शरणार्थियों द्वारा एक औरत की रेप के गला काट कर हत्या करने के बाद पुलिस से भिड़े व आई.एस.आई. एस के झण्डे फहराये। अब यह समूचे यूरोप को सोचना है कि कहीं ऐसा न हो आज की मानवीय संवेदना कल तुम्हें ही शरणार्थी बनने पर मजबूर न कर दें, सोचो तुम कहा शरण लोगे? अफगानिस्तान या सीरिया?

- राजीव चौधरी

महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन
10 वें विश्व हिन्दी सम्मलेन के अवसर पर विशेष

स्वामी दयानंद ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को असफल होते देखा था और उसके असफल होने का मुख्य कारण भारतीय समाज में एकता की कमी होना था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस कमी को समाप्त करना आवश्यक समझा। उन्होंने चिन्तन-मंथन किया कि अगर भारत देश को एक सूत्र में जोड़ना है तो उसकी एक भाषा होना अत्यंत आवश्यक है। यह रिक्त स्थान अगर कोई भर सकता था तो वह हिंदी भाषा थी। स्वामी दयानंद द्वारा सर्वप्रथम 19 वीं सदी के चौथे चरण में एक राष्ट्र भाषा का प्रश्न उठाया और स्वयं गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने इस हेतु आर्यभाषा (हिंदी) को ही इस पद के योग्य बताया। अपने जीवन काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ एवं उपदेश आदि हिंदी में देने आरंभ किये जिससे हिंदी भाषा का प्रचार आरंभ हुआ और सबसे बढ़कर जनसाधारण के समझने के लिए हिंदी भाषा में वेदों का भाष्य किया। इससे हिन्दू साहित्य और भाषा को नये उपादान प्रदान किये और प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिंदी भाषा को जानना प्रायः अनिवार्य कर दिया गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती इससे पहले संस्कृत में भाषण करते थे इसलिए केवल पठित पंडित वर्ग ही उनके विचारों को समझ पाता था। कालांतर में जब उन्होंने हिंदी भाषा में व्याख्यान प्रारंभ किये तो उससे जन साधारण की उपस्थिति न केवल अधिक हो गई अपितु जनता के लिए उनके प्रवचनों को ग्रहण करना आसान हो गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने संपर्क में आने वाले सभी देशी राजाओं को अपने राजकुमारों को हिंदी के माध्यम से धार्मिक शिक्षा दिलवाने की सलाह दी थी जिससे उनमें देश-भक्ति का सूत्रपात हो सके।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा अपने सभी ग्रन्थ हिंदी भाषा में रचे गये जैसे सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद-भाष्य आदि। इनके सैकड़ों संस्करण छपे और देश में उनके प्रचार से हिंदी भाषा के प्रचार को जो गति मिली उसका पाठक सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

1882 में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में भाषा के निर्धारण को लेकर हन्टर कमीशन के नाम से कोलकता में आयोग का गठन सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में किया गया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस कमीशन के समक्ष हिंदी को शिक्षा की भाषा निर्धारित करने के लिए आर्यसमाजों को निर्देश दिया कि वे हिन्दी भाषा के समर्थन में हंटर आयोग में अपनी

...शेष पेज 5 पर

स्वाध्याय

अहो आश्चर्य! पानी में मीन प्यासी

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम्। मूला सुक्षत्र मूलय।।
ऋ. 7।89।4
ऋषिः - वसिष्ठः। देवता-वरुणः।। छन्द-आर्षीगायत्री।।

शब्दार्थ - **जरिताम्**=मुझ स्तोता को **अपां मध्ये तस्थिवांसम्**= पानी के बीच में बैठे हुए भी **तृष्णा**=प्यास अविदत्=लगी है। **सुक्षत्र**=हे शुभशक्तिवाले! **मूल**=मुझे सुखी कर, **मूलय**=सुखी कर।

विनय - हे प्रभो! क्या तुम्हें मेरी दशा पर तरस नहीं आता? सन्त लोग मेरे-जैसों पर हंस रहे हैं और कह रहे हैं, ''मुझे देखत आवत हांसी, पानी में मीन प्यासी।'' सचमुच मैं तो पानी के बीच में बैठा हुआ भी प्यास से व्याकुल हो रहा हूं। तेरे करुणा-सागर में रहता हुआ भी मैं दु:खी हूं, सन्तप्त हूं। जब तूने मेरी इच्छाओं को पूरा करने के लिए ही यह संसार ऐश्वर्यों से भर रखा है और तुम प्रतिक्षण मेरी एक-एक आवश्यकता को बड़ी सावधानी से ठीक-ठीक स्वयं पूरा कर रहे हो, तब मुझे अपने में कोई इच्छा या कामना रखने की क्या आवश्यकता है? परन्तु फिर भी न जाने क्यों मुझे अनेक तृष्णाएं लग रही हैं, सैकड़ों कामनाएं मुझे जला रही हैं। हे नाथ! मैं क्या करूं? इस विषम दशा से मेरा कौन उद्धार करेगा? हे उत्तम शक्तिवाले! मैं इतना अशक्त हो गया हूं- इतना निर्बल हूं कि सामने भरे पड़े हुए पानी से भी अपनी प्यास बुझा लेने में असमर्थ हूं। मैं जानता हूं कि मुझे क्या करना चाहिए, किन्तु कमजोरी इतनी है कि उसे मैं कर नहीं सकता। हे सच्चिदानन्दरूप! मैं देखता हूं कि आत्मा में सचमुच अपरिमित बल है, तो भी मैं उस बल को ग्रहण नहीं कर सकता। मैं जानता हूं कि मेरी आत्मा अमूल्य ज्ञान-रत्नों का भण्डार है, परन्तु मैं इस रत्नाकर के बीच में बैठा हुआ भी ज्ञान का भिखारी बना हुआ हूं।

मेरे आनन्दमय प्रभो! मैं जानता हूं कि तुम सर्वदा, सर्वत्र हो, सदा मेरे साथ हो, पर फिर भी मैं कभी आनन्द नहीं प्राप्त कर पाता। अरे, मैं तो अमृत के सागर में पड़ा मरा जा रहा हूं। तेरी अमृतमय गोद में बैठा हुआ, स्वयं अमृतत्व होता हुआ बार-बार मौत के मुंह में जा रहा हूं। हे नाथ। अब तो मुझ पर दया करो! मुझे इस विषम अवस्थासे उबार लो! अब तो मुझे सुखी कर दो! हे परमकारुणिक! हे सुक्षत्र। मुझे इतना क्षत्र-इतना बल तो दे दो कि मैं सामने कि भरे पड़े जल का सेवन तो कर सकूं, इससे अपनी तृष्णा शान्त करके सुखी तो हो सकूं। हे शक्तिवाले! जिस तूने मुझे इस पानी के सागर में रखा है, वही तू मुझे इसके पीने का सामर्थ्य भी प्रदान कर, जिससे मैं अपनी प्यास बुझाकर सुखी हो सकूं। हे नाथ! मुझे सुखी कर, सुखी कर, अब तो अपनी शक्ति देकर मुझे सुखी कर! यह तेरा स्तोता कब से चिल्ला रहा है, अब तो इसे सुखी कर दे!

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

मो. 09540040339

सम्पादकीय

आखिर धार्मिक भ्रष्टाचार का क्या करें?

आमतौर पर देखा जाये तो जिस देश में पब्लिक शौचालय का लोटा जंजीर में बांधना पड़ता हो करोड़ो रुपये के लेन-देन करने वाले बैंक में दो रुपये की पेन्सिल धागे में बांधनी पड़ती हो उस देश को भ्रष्टाचार मुक्त देखने का सपना मात्र एक भ्रम जैसा है। किन्तु फिर भी जिस प्रकार सरकारें आर्थिक भ्रष्टाचार या राजनैतिक भ्रष्टाचार को राष्ट्र के लिये खतरा मानकर इस पर कानून प्रभावी करती हैं। उसी प्रकार से धार्मिक भ्रष्टाचार पर भी एक बार सरकारों को इस विषय पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि इस भ्रष्टाचार की चपेट में समाज का एक तबका इस तरीके से डूब चुका है जिसका बच पाना बहुत मुश्किल है। लेकिन सरकार चाहे तो कठोर कानून और सामाजिक जाग्रति आन्दोलन एक हद तक इससे पार पा सकते हैं। क्योंकि इस भ्रष्टाचार में लिप्त कोई बड़े सेठ, साहूकार या कुर्सी पर विराजमान राजनेता नहीं है; लिप्त हैं तो कुछ झाड़-फूंक करने वाले ओझा, जिन्हें देहाती भाषा में सयाने और शहरी भाषा में बाबा या तांत्रिक कहते हैं। जो खुद को सिद्ध बाबा कहते हैं। अभी हाल ही में ऐसे ही एक तांत्रिक बाबा के कहने पर उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात के सिकंदरा क्षेत्र में एक व्यक्ति द्वारा अपनी बेटी की हत्या करने का मामला सामने आया बताया जा रहा है कि उसने अमीर होने के लिये अपनी बेटी की हत्या कर दी। आप सोच रहे होंगे मैंने इसे धार्मिक भ्रष्टाचार क्यों कहा क्योंकि ये सारे कुकृत्य जैसे औलाद के लिये बलि, औलाद हो जाये तो धन के लिये, बलि, कहीं बरसात के लिये बलि तो कहीं बीमारी से निजात पाने के लिये बलि। सब के सब धर्म की आड़ में होते हैं और करवाने वाले बाबा, तांत्रिक ओझा, खुद को धर्म से जुड़ा बताते हैं। अभी कुछ दिनों पहले की घटना है। मुझे लिखने में शर्म आ रही है , आपको पढ़ने में भी शर्म आयेगी। मुम्बई के घाटकोपर इलाके में पुलिस ने युवती से दुष्कर्म करने के आरोप में एक तांत्रिक बाबा को गिरफ्तार किया है। इस बाबा पर आरोप था कि उसने पीड़ित युवती के पिता की बीमारी ठीक करने के बहाने उसकी 25 वर्षीय बेटी के साथ उसे बेहोश करके बलात्कार किया। आमतौर देखा जाये तो भले ही हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर गये हों, खुद को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कितनी भी अच्छी छवि परोसते हों पर आज भी भारत का एक तबका, बीमारी की हालत में अस्पतालों में जाने के बजाय इन ढोंगियों के चक्कर में फंस जाता है। न जाने औलाद पाने की चाह में कितनी औरतें इन बाबाओं की वासना का शिकार होती हैं। इन सब लोगों की मैं इतनी गलती नहीं मानता जितनी भारत सरकार की क्योंकि जाने कितने हाजी, नमाजी, तांत्रिक बाबा अपने विज्ञापन अखबारों में देते हैं। जो मनुष्य के सब कष्टों के निवारण का दावा करते हैं , उनके खिलाफ कोई कार्रवाही नही करती। जब तक भारत सरकार इन तांत्रिकों के खिलाफ कार्रवाही नहीं करेगी तब तक ये धार्मिक भ्रष्टाचार होता रहेगा और देश शर्मसार होता रहेगा।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

व्यवहारभानु

प्रश्न1: क्या महर्षि ने 'व्यवहारभानु' नामक ग्रन्थ की भी रचना की है?

उत्तर : हां, महर्षि ने व्यवहारभानु नामक एक अन्य उपयोगी ग्रन्थ भी लिखा है।

प्रश्न 2: इस ग्रन्थ को लिखने का क्या प्रयोजन है?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है- व्यवहार का सूर्य या व्यवहार रूपी सूर्य। जैसे सूर्य के प्रकाश में अन्धकार समाप्त होकर सब कार्य भली प्रकार सिद्ध होते हैं, उसी प्रकार जो व्यक्ति व्यवहार में कुशल होता है, वह जीवन में सुख व सफलता प्राप्त करता है। अत: महर्षि ने सबको, विशेषकर बालकों को, यथायोग्य व्यवहार की शिक्षा देने के लिए इस ग्रन्थ को रचा। महर्षि के अपने शब्दों में, ''व्यवहारभानु ग्रन्थ को बनाकर प्रसिद्ध करता हूं कि जिसको देख-दिखा, पढ़-पढ़ाकर मनुष्य अपने और अपने-अपने संतान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''

प्रश्न 3: क्या इसमें केवल व्यवहार की शिक्षा ही दी गई है?

उत्तर : नहीं, व्यवहार के अतिरिक्त विद्या-अविद्या, धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सत्य-असत्य, मूर्ख-अमूर्ख, पण्डित-अपण्डित, न्याय-अन्याय आदि अनेक विषयों का परिचय व ज्ञान-उत्तर के माध्यम से कराया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रदान करने की विधि, ब्रह्मचर्य, राजा आदि अनेक विषयों को भी लिया गया है।

प्रश्न 4: क्या इसमें केवल पारिवारिक व्यवहार का उल्लेख है अथवा अन्य भी?

उत्तर : इसमें माता-पिता व सन्तान के आपस में व्यवहार के अतिरिक्त बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के लिए आचार्य, विद्यार्थी, राजा-प्रजा, धार्मिक, अधार्मिक, मूर्ख, बुद्धिमान, पति-पत्नी इन सबको भी आपसी व्यवहार में कुशलता प्राप्त करने की शिक्षा प्रदान की गई है।

प्रश्न 5: इससे तो विदित होता है कि यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी होगा?

उत्तर : हां, निश्चित रूप से यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है। इसके पठन से जहां विद्या पढ़ने-पढ़ाने की प्रेरणा मिलती है, वहां यह भी पता चलता है कि जो मनुष्य विद्या कम भी जानता है, परन्तु दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक होके खाने-पीने, बोलने, सुनने, बैठने, उठने, लेन-देन आदि व्यवहार सत्य से युक्त होकर यथायोग्य रूप से करता है, वह कहीं कभी दु:ख को प्राप्त नहीं होता। इसके विपरीत, जो उच्च विद्या पढ़कर भी उत्तम व्यवहार नहीं करता, दुष्ट कर्म करता है, वह कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार,यह सुख प्राप्ति का मार्ग-दर्शक ग्रन्थ हे।

प्रश्न 6: यह ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है?

उत्तर : यह ग्रन्थ सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है, जिससे सभी इसे सुखपूर्वक समझ कर अपना व्यवहार व स्वभाव सुधार कर उत्तम कार्य कर सकें। बीच-बीच में संस्कृत भाषा में प्रमाण भी दिये गये हैं। इनके मनोरंजक दृष्टान्त देकर अभिप्राय स्पष्ट किया गया है। इससे ग्रन्थ बहुत अधिक सरल एवं रुचिकर बन गया है।

प्रश्न 7: 'व्यवहारभानु' की रचना कब हुई?

उत्तर : इस ग्रन्थ का रचना काल संवत् 1936, फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष की 15वीं तिथि है। इसे महर्षि ने काशी में लिखा था।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

पितृ यज्ञ और पितर की परिभाषा

वर्तमान पाश्चात्य सभ्यता एवं अति आधुनिक भौतिककरण के इस युग में सम्पूर्ण मानव समाज के परिवारों के उपेक्षित व्यवहार के कारण 90 प्रतिशत वृद्ध अत्यन्त दु:खी हैं और अनुमानित 40 प्रतिशत संन्यासी एवं वानप्रस्थियों को मृत्यु की अन्तिम गति की चिन्ता बनी रहती है और 50 प्रतिशत उपदेशकों को-अर्थाभाव एवं परिवार व समाज की अनदेखी के कारण जीवन का अन्तिम सोपान कैसे गुजरे की चिन्ता बनी रहती है। इन समस्याओं के समाधान के लिए हमें आगे आना ही होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपनी दूरदर्शिता के कारण इस ज्वलन्त समस्या को समझते थे, तभी तो उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के पंच महायज्ञ विषय में सर्वाधिक पांच पृष्ठ पितृ यज्ञ और पितर की परिभाषा में लिखे हैं। जिसका सारांश सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है-

पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय।
पुनन्तु विश्रा भूतानि जातवेद: पुनीहि मा।। (य.अ. 19 म. 39)

पितृ यज्ञ जिसके दो भेद हैं -एक तर्पण दूसरा श्राद्ध उनमें से जिस कर्म को करके विद्वान रूप देवऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते है। सो तर्पण कहलाता है तथा जोउन लोगों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना है, उसी को श्राद्ध जानना चाहिए। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए जो प्रत्यक्ष है, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसलिए उनकी सेवा नहीं हो सकती तथा जो उनके लिए कोई पदार्थ दिया चाहे वह भी उनको नहीं मिल सकता। इससे केवल विद्यवानों के ही श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का नाम ''तर्पण'' और ''श्राद्ध'' वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवा करने वाले इन दोनों के प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं। तो तर्पण आदि कर्म से सत्कार करने योग्य देव, ऋषि और पितर हैं।

(पुनन्तु) हे! जातवेद परमेश्वर आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिये और आपके उपासक आपकी आज्ञा पालते हैं अथवा जोकि विद्वान पुरुष कहलाते हैं वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें और आपके दिये विशेष ज्ञान व आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियां पवित्र हों तथा (पुनन्तु विश्वा भूतानि) सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

(द्वयंवा.) दो लक्षणों के पाये जाने से मनुष्यों की दो संख्या होती है अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। उनमें भेद होने के सत्य और झूठ दो कारण हैं। (सत्यमेव) जो कोई सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्यकर्म करते है। वे देव तथा जो झूठ बोलते हैं, झूठ कर्म करते है।, वे मनुष्य हैं। इसलिए झूठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होना सबको उचित है। इस कारण से बुद्धिमान लोग निरन्तर सत्य ही कहें, माने और करें। क्योंकि सत्य आचरण करने वाले देव हैं, वे तो कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान हो के सदा आनन्द में रहते हैं, परन्तु उनसे विपरीत चलने वाले मनुष्य दु:ख को प्राप्त होकर सब दिन पीड़ित रहते हैं। इससे सत्यधारी विद्वान ही देव कहलाते हैं।

(ऊर्ज्जवह.) पिता व स्वामी अपने पुत्र, पौत्र स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवे कि (तर्पयतमे.) जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता, मातामहादि और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान लोग जो अवस्था या ज्ञान से बड़े और मान्य करने योग्य है, तुम लोग उनकी (उर्ज.) उत्तम जल (अमृत) रोग नामक करने वाले उत्तम अन्न, सभी प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न होकर तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें, क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे और ऐसा विनय सदा रखो कि हे! पूर्वेक्ति पितर लोगो आप हमारे अमृत रूप पदार्थों के भोगों से तृप्त होइए और हम लोग जो-जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें उन-उन की आज्ञा किया कीजिए। हम लोग मन वचन और कर्म से आपके सुख करने में स्थित हैं। आप किसी प्रकार का दु:ख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है-वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना चाहिए कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष प्राप्त न हो।

(आयुन्त न:) पितृ शब्द से सबके रक्षक श्रेष्ठ स्वभाव वाले ज्ञानियों का ग्रहण होता है। क्योंकि जैसी रक्षा मनुष्यों की सुशिक्षा और विद्या से ही हो सकती है वैसी किसी दूसरे प्रकार से नहीं। इसलिए जो विद्वान लोग मनुष्यों को ज्ञान-चक्षु देकर उनके अविद्यरूपी अन्धकार के नाश करने वाले हैं, उनको पितर कहते हैं। उनके सत्कार के लिए मनुष्य मात्र को ईश्वर की यह आज्ञा है कि वे इन आते हुए पितर लोगों को देखकर अभ्युत्थान अर्थात् उठ के प्राप्ति पूर्वक कहें कि आइये-बैठिये, कुछ जलपान कीजिये और खाने-पीने की आज्ञा दीजिए। पश्चात् जो-जो बातें उपदेश करने योग्य हैं सो-सो प्रीतिपूर्वक समझाइये कि जिससे हम लोग भी सत्य विद्या युक्त हो के सब मनुष्यों के पितर कहलावें।

विद्वानों के दो मार्ग होते हैं-एक देवयान दूसरा पितृयान अर्थात् जो विद्वा मार्ग है वह देवयान और जो कार्मोपासना मार्ग है वह पितृयान कहलाता है। सब लोग दोनों प्रकार के पुरुषार्थ को सदा करते रहें। जो विद्वान लोग कनिष्ट मध्यम और उत्तम चन्द्रमा के समान सब प्रजाओं को आनन्द कराने वाले प्राण विद्या-निधान शत्रु रहित अर्थात् सबके प्रिय पक्षपात् छोड़ कर सत्य मार्ग में चलने वाले तथा जोकि ऋतु अर्थात् ब्रहा यतार्थ धर्म और सत्य विद्या के जानने वाले हैं वे पितर लोग युद्धदि व्यवहारों में हमारे साथ होकर अथवा उनकी विद्यादे कर हमारी रक्षा करें।

जो चौबीस वर्ष ब्रह्मचर्याश्रम से वेदादि विधाओं को पढ़ कर सबके उपकारी और अमृत रूप ज्ञान के देने वाले होते हैं। जो अडतालीस वर्ष पर्यन्त नितेन्द्रियता के साथ सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़कर हस्तक्रियाओं से भी सब विद्या के दृष्टान्त साक्षात् देख कर दिखलाते और जो सबके सुखी होने के लिए सदा प्रयत्न करते रहते हैं उनका मान भी सब लोगों को करना उचित है।

(पुनन्तु मा पिता महा:) जो पितर लोग शान्तामा और दयालु हैं वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें। इसी प्रकार पितामह और प्रपितामह भी मुझको अपनी उत्तम विद्या पढ़ा कर पवित्र करें। इसलिए उनकी शिक्षा को सुन कर ब्रह्मचर्य धारण करने से सौ वर्ष पर्यन्त आनन्दयुक्त उमर होती रहे तथा जहां कहीं अमावस्या में पितृयज्ञ करना लिखा है वहां भी इसी अभिप्राय से है कि जो कदाचित् नित्य उनकी सेवा न कर सके तो महीने-महीने अर्थात् अमावस्या में मासेष्टि होती है, उसमें उन लोगों को बुलाकर अवश्य सत्कार करें।

-उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक, देहरादून

संस्कृतम्

आर्याणां संस्कृति:

संस्करणं परिष्करणं संस्कृति: भवति।सा संस्कृति: कथ्यते या दुर्गुणान् दुर्व्यसनानि पापानि पापभावनाश्च हृदयेभ्यो निस्सार्य हृदयानि निष्पापानि निर्मलानि सत्त्वभावोपेतानि च करोति। प्राचीनानाम् आर्याणां संस्कृते: एता एव निशेषता: सन्ति। तेषा संस्कृति: मनुष्यान् सर्वविधपापेभ्यो निवारयति, तान् सन्मार्गमुपनयति, तेषां हृदयेषु सत्यस्य अहिंसाया: धर्मस्य दयाया: परोपकारस्य धैर्यस्य त्यागस्य शीलस्य सहानुभूते: दानादिगुणानां च स्थापनां करोति।

आर्य संस्कृते: विशेषगुणा: संक्षेपत एते सन्ति-1. **धर्मप्राधान्यम्**-'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स धर्म:' इति लक्षणानुसारं यतो लौकिकं पारलौकिकं च कल्याणं भवति, तदेव कर्म कर्तव्यम्, नान्यत्। धर्म एव मनुष्येषु पशुभ्यो विशेषोऽस्ति, इति तेषां मतम्। 2. **वर्णव्यवस्था**- ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रा: चत्वारो वर्णा: सन्ति। ते स्वं स्वं कर्म कुर्यु:। वर्ण व्यवस्था गुणकर्मानुसारम् आसीत्, न तु जन्ममात्रेण। 3. **आश्रमव्यवस्था**-ब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासा: चत्वार: आश्रमा: सन्ति, ते सर्वैरपि पालनीया:। 4. **कर्मवाद:**- मनुष्य: स्वकर्मानुसारं फलं प्राप्नोति, पुण्यकर्मणा पुण्यं पापकर्मणा च पापम्। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' 'पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पाप: पापेनैवेति' (वृहदारण्यकम्)। 5. **पुनर्जन्मवाद:** - मनुष्यस्य कर्मानुसारं पुनर्जन्म भवति। उक्तं च गीतायाम्-'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु:, ध्रुवं जन्म मृतस्य च'। 6. **मोक्ष:** - मनुष्यो ज्ञानाग्निना सर्वकर्माणि प्रदह्य मोक्षं लभते। मोक्षप्राप्तो जीवस्य पुनरावृत्तिर्न भवति। मोक्ष एव परम: पुरुषार्थ:। 7. **श्रुतीनां प्रामाण्यम्**-वेदा: परमप्रमाणभूता: सन्ति। वेदाक्तमार्गेण सदा प्रवर्तितव्यम्। 8. **यज्ञस्य महत्त्वम्**- सर्वैर्मनुष्यै: पन्च यज्ञा अवश्यं कार्या:। 9. **अध्यात्मप्रवृत्ति:** - भौतिकवादं त्यक्त्वा अध्यात्मे प्रवृत्ति: कार्या। 10. **त्याग:** - जन: संसारे विषयेषु असक्तो भूत्वा कर्म कुर्यात्। यथा च गीतायां निष्कामकर्मयोग: प्रतिपादित:। उक्तं च वेदेऽपि 'तेन त्यक्तेन भुजीथा: मा गृध: कस्यस्विद् धनम्।' 11 **तपोमयं जीवनम्**- मनुष्याणां जीवनं तपोमयं स्यात्, न तु भोगप्रधानम्। 12. **तनोवनानां महत्त्वम्** - मनुष्यो ब्रह्मचर्यवानप्रस्थसंन्यासाश्रमकाले तपोवनं सेवेत। 13. **मातृपितृगुरुभक्ति:** - 'मातृदेवो भव,' पितृदेवो भव', आचार्यदेवो भव' इति। 14. **सत्यनिष्ठता**- सत्यमेव ग्राह्यम्, नासत्यम्। 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति। 15. **अहिंसापालनम्** - 'अहिंसा परमो धर्म:' इति। एतस्मात् स्पष्टमेतदस्ति यदार्यसंस्कृत्यैव विश्वस्य कल्याणं भवितुमर्हति।

साभार : रचनानुवादकौमुदी

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने लगाया वैदिक साहित्य का स्टाल

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिनांक 12 से 20 सितम्बर 2015 तक वैदिक साहित्य और हिन्दी साहित्य पुस्तकों का स्टाल लगाया गया है, मेले में स्थिति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक स्टाल का उद्घाटन श्री ज्ञानचन्द गुप्ता आर्य समाज धामा वाला के प्रधान द्वारा किया गया। वैदिक साहित्य स्टाल पर युवाओं और महिलाओं की अपार भीड़ को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि देहरादून के युवा वर्ग में वैदिक साहित्य व महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने में नवचेतना जागृत हो रही है।

-रवि प्रकाश

दर्शन योग महाविद्यालय की नई शाखा में
प्रवेश प्रारम्भ

दर्शन योग महाविद्यालय की नई शाखा रोजड़ में 1 नवम्बर 2015 से प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं।

प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष एवं शैक्षिक योग्यता 12वीं या समकक्ष परीक्षा पास।

प्रवेशार्थी सम्पर्क करें-
ब्र. दिनेश कुमार,
मो. 09409415011, 09409415017

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर के तत्त्वावधान में
ऋषि स्मृति सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 27 से 30 सितम्बर 2015 को ऋषि स्मृति सम्मेलन होगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वामी धर्मानन्द जी महाराज, महाशय धर्मपाल जी, श्री सत्यपाल सिंह जी (सांसद) श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री विजय सिंह भाटी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान,के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न होगा। ऋग्वेद यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश एवं वेदपाठी पं. राम नारायण शास्त्री श्री विमल जी शास्त्री द्वारा होगा।

-दुर्गादास वैदिक

6 शिक्षण संस्थाओं के मध्य
वेदों का उपदेश समारोह सम्पन्न

आर्य समाज कटनी (म.प्र) में दिनांक 7 से 9 सितम्बर 2015 के बीच कलेक्ट्रेट हाल में 6 शिक्षण संस्थाओं के मध्य वेदों का उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य आनन्द पुरुषार्थी व लगभग 12 शासकीय विभागों के अधिकारी व कर्मचारी सम्मिलित हुये। इस अवसर पर आचार्य जी ने तनाव मुक्त जीवन पर अपने विचार रखे।

-आर्य योगेश मिश्र, मंत्री

आर्य सन्देश यदि आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा है या आप आर्य सन्देश के लिए कोई सुझाव या शिकायत करना चाहते हैं तो हमारी ई-मेल आई डी. aryasandeshdelhi@gmail.com पर मेल करें। साथ ही आप अपनी ई-मेल आई डी. भी लिखकर भेजें जिससे आपके पास आर्य सन्देश मेल के जरिए भेजा जा सके।

-सम्पादक

आर्य समाज हनुमान रोड, दिल्ली के तत्त्वावधान में
वेद प्रचार समारोह सोल्लास सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में श्रावणी उपाकर्म पर्व दिनांक 29 अगस्त से 5 सितम्बर 2015 तक डॉ. कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सामूहिक यज्ञोपवीत तथा स्वाध्याय की महिमा पर प्रवचन के साथ-साथ चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ का आयोजन भी सम्पन्न हुआ। 5 सितम्बर को दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों तथा गुरुकुलों के छात्र/छात्राओं ने श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें कु. तान्या प्रथम, इशान मग्नू द्वितीय, व कु. मधुमाला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। श्री शंकर मित्र वेदालंकार के ओजस्वी भजन व आचार्य हरि प्रसाद जी ने अग्नि, वायु, जल आदि की विशेषताओं पर विचार व्यक्त किये।

-दयानन्द यादव, मंत्री

पृष्ठ 1 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती और ...

सम्मति भेजें। फर्रुखाबाद, देहरादून, मेरठ, कानपुर, लखनऊ आदि आर्यसमाजों को भी इस विषय पर कोलकाता पत्र भेजने को कहा था।

हिंदी भाषा भारतीय जनमानस की मानसिक भाषा है इसलिए उसे ही पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में स्वीकृत किया जाये। ऐसा समस्त आर्यसमाज द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार के लिए प्रयत्न किया गया था। निश्चित रूप से हिंदी भाषा के प्रचार के लिए यह कार्य ऐतिहासिक महत्त्व का था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के देहांत के पश्चात् आर्यसमाज के सदस्यों ने हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में दिन रात एक कर दिया। आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा लाखों पुस्तकें हिंदी भाषा में अलग अलग विषयों पर लिखी गई। गद्य, पद्य, काव्य, निबन्ध आदि सभी प्रकार के साहित्य की रचना हिंदी भाषा में हुई। हजारों पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी भाषा में प्रकाशन हुआ। सैंकड़ों पाठशालाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों के माध्यम से हिंदी भाषा का सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में जैसे मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार हुआ।

आर्य दर्पण (आर्य समाज का सर्वप्रथम हिंदी पत्र) , आर्य भूषण, आर्य समाचार, भारतसुदशा प्रवर्तक, वेद प्रकाश, आर्य पत्र, आर्य समाचार, आर्य विनय, आर्य सिद्धांत, आर्य भगिनी आदि अनेक पत्र तो विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा 20 वीं शताब्दी आरम्भ होने से पहले ही निकलने आरम्भ कर दिए थे। 20 वीं शताब्दी में इनकी संख्या इतनी थी कि इस लेख में उन्हें समाहित करना संभव नहीं हैं। पाठक इस उल्लेख से समझ सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार का माध्यम हिन्दी होने के कारण हिंदी भाषा के उत्थान में आर्यसमाज का क्या योगदान था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रशंसक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिंदी भाषा को देन से साहित्य जगत भली प्रकार से परिचित है। कालांतर में मुंशी प्रेमचंद, कहानीकार सुदर्शन, आचार्य रामदेव, बनारसी दास चतुर्वेदी, इंद्र विद्यावाचस्पति, सुमित्रानंदन पन्त, मैथिलिशरण गुप्त, पदम् सिंह शर्मा आदि से आरंभ होकर हरिवंश राय बच्चन, विष्णु प्रभाकर, क्षितीश वेदालंकार आदि तक हजारों की संख्या में आर्य समाज से दीक्षित और अनुप्राणित साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य की रचना की जिससे हिंदी समस्त भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो गई।

स्वामी श्रद्धानंद ने अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक को एक रात में उर्दू से हिंदी में परिवर्तित कर दिया, उन्हें आर्थिक हानि अवश्य उठानी पड़ी पर उनके पत्र की प्रसिद्धि हुई व उसका आशातीत प्रभाव पड़ा। **-डॉ. विवेक आर्य**

प्रेरक प्रसंग

तुम्हें याद हो कि न याद हो

1903 ई. की बात है प्रसिद्ध विद्वान व लेखक श्री मुंशी इन्द्रमणिजी मुरादाबाद के एक अज़ीज़ भगवत प्रसाद भ्रष्ट बुद्धि होकर मुसलमान बन गये। वह मुंशी इन्द्रमणि जिसकी लौहलेखनी से इस्लाम कांपता था, उसी की सन्तान में से एक मुसलमान बन जाए। मुसलमान तब वैसे ही इतरा रहे थे जैसे हीरालाल गांधी के मुसलमान बनने पर।

तब आर्य समाज लाहौर में मुंशीजी के उस पौत्र को पुनः शुद्ध करके आर्य जाति का अंग बनाया गया। मुंशी जगन्नाथ दास के बहकावे में आकर ऋषि दयानन्द व आर्य समाज के विरुद्ध निराधार बातें कहने व लिखने वाले मुंशी इन्द्रमणि तब जीवित होते तो ऋषि के उपकारों का ध्यान कर मन-ही-मन में कितना पश्चात्ताप करते!

आज भी इस बात की आवश्यकता है कि आर्य समाज शुद्धि के कार्य को सतर्क व सक्रिय होकर करे। इसके लिए जन्म की जात-पात की गली-सड़ी कड़ियां तोड़ने का हम सबको साहस करना चाहिए।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

आर्य समाज राजनगर, पालम कालोनी दिल्ली के तत्त्वावधान में

श्रावणी एवं वेद प्रचार पर्व

आर्य समाज राज नगर, पालम कॉलोनी दिनांक 25 से 27 सितम्बर 2015 के मध्य श्रावणी एवं वेद प्रचार पर्व का आयोजन कर रही है। सभी आर्य बन्धुओं से अनुरोध है सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित धर्म लाभ हेतु अवश्य पधारें।

- श्री धर्मेन्द्र आर्य, प्रधान

आर्यसमाज (ए.सी. ब्लॉक) टैगोर गार्डन श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्यसमाज (ए.सी. ब्लॉक) टैगोर गार्डन दिनांक 23 से 27 सितम्बर 2015 तक श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. उमेश कुलश्रेष्ठ का मार्ग दर्शन प्राप्त होगा। आप सभी इष्ट मित्रों सहित आमंत्रित हैं। **-जगन्नाथ मल्होत्रा, मंत्री**

आर्य समाज राजनगर, पालम कालोनी दिल्ली के तत्त्वावधान में

श्रावणी एवं वेद प्रचार पर्व

आर्य समाज राज नगर, पालम कॉलोनी दिनांक 25 से 27 सितम्बर 2015 के मध्य श्रावणी एवं वेद प्रचार पर्व का आयोजन कर रही है। सभी आर्य बन्धुओं से अनुरोध है सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित धर्म लाभ हेतु अवश्य पधारें।

- श्री धर्मेन्द्र आर्य, प्रधान

आर्य समाज रोहतास नगर के तत्त्वावधान में

श्रावणी पर्व महोत्सव

आर्य समाज रोहतास नगर शिवाजी पार्क शाहदरा दिल्ली दिनांक 24 से 27 सितम्बर 2015 तक 50वां श्रावणी पर्व (वेद प्रचार) महोत्सव का आयोजन कर रहा है। जिसमें आचार्य श्री हरि प्रसाद जी द्वारा जीवनोपयोगी प्रवचनों की श्रृंखला प्रस्तुत की जाएगी।

-आर्य सुखबीर सिंह त्यागी महामंत्री, 09871428212

आयसमाज ग्रेटर कैलाश - 1 के तत्वावधान में

वेद प्रचार व श्रावणी पर्व संपन्न

आयसमाज ग्रेटर कैलाश - 1 के तत्त्वावधान में दिनांक 31 अगस्त से 6 सितम्बर 2015 तक वेद प्रचार सप्ताह व श्रावणी पर्व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई थे। समारोह अध्यक्ष डॉ. रामप्रकाश भूतपूर्व सांसद और कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय थे। डॉ. राम प्रकाश जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया तथा आर्य समाज की वैबसाईट का उद्घाटन भी किया। **-राजेन्द्र वर्मा, मंत्री**

दर्शन योग विद्यालय का योग विद्या शिविर 30 सितम्बर तक

दर्शन योग विद्यालय की स्तर वृद्धि व योगविद्या की रक्षा हेतु एक वर्षीय सघन योग साधना शिविर का आयोजन जोकि अक्टूबर 2014 में आरम्भ हुआ था। निर्बाध रूप से चल रहा है। उस उच्चस्तरीय शिविर में विशेष योग्यता वाले पच्चीस से तीस साधक-शिविरार्थी नियमित रूप से भाग ले रहे है और प्रायः आंशिक रूप से भी अनेक शिविरार्थी भाग लेते रहे हैं। इस शिविर का 30 सितम्बर 2015 को समापन होने जा रहा है। समापन समारोह में आप सादर आमंत्रित हैं। कार्यक्रम प्रा: 9 बजे से प्रारम्भ होकर लगभग 12 बजे तक चलेगा।

-स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती, आचार्य

आपके पत्र

विदेश से लौटने पर 'आर्य सन्देश' की प्रतियां देखने/पढ़ने का अवसर मिला। आपके सम्पादकीय लेखों पर हार्दिक बधाई एवं साधुवाद। इन भावों/उद्गारों को सभी सांसद/विधायकों तक पहुंचाना मेरे विचार में आवश्यक है। वे ही प्रमादी कार्य करने में सक्षम हैं। मैं मानता हूं 'आर्य सन्देश' की पहुंच बहुत छोटी है मेरा सुभाव है आप इन विचारों को सर्कुलर रूप में छपवाकर उनसे विचार करने की प्रार्थना करें। शायद कुछ चिन्तन-मनन हो। पुनः साधुवाद,

-रामभज मदान, 126, राजा गार्डन, नई दिल्ली-110012

आर्य समाज सुशांत लोक-1 (डी ब्लाक) गुड़गांव के तत्त्वावधान में

द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सुशांत लोक-1 (डी. ब्लॉक) गुड़गांव के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 9 सितम्बर 2015 के मध्य द्वितीय वार्षिकोसव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में महिला संन्यासी स्वामी मुक्तानंदा जी महाराज, आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की संस्थापिका एवं प्राचार्या आचार्या प्रियंवदा जी, प्रकांड वैदिक विदुषी प्रो. वेदवती जी वैदिक (धर्मपत्नी श्री वेद प्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार) एवं शास्त्रीय गायक पं. अंकित शास्त्री एवं गुरुकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारियों द्वारा ईश्वर भक्ति का सुमधुर गायन किया। आर्य समाज सुशांत लोक-1 के अधिकारीगणों का योगदान भी सराहनीय रहा।

-किरण रहेजा, मंत्री

Glimpses of the Rig Veda

Mitra and Varuna

The vedic hymns are multipurpose hymns in their essential nature, as they are the revealed knowledge not composed by any human individual. Sometimes, in one and the same hymn, the instruction begins with materialistic aspect, and then in subsequent verses it is elevated in the same hymn, step by step, through stages upto the highest transcendental knowledge, The adjectives and other qualifying phrases in the verse indicate to an interpreter the rationale of multiple meanings.

Terms like Agni, Mitra, Varuna sometimes all the three occur as a triad, sometimes in pairs as dyads, These triads and dyads mean differently in ephemeral, supramental, cosmogenic or social plane. God in One, but in Him are embedded all divine virtues.

Mitra is associated with all that is harmony and shining. Varuna signifies all that is vast and pure. In other contexts, Mitra and Varuna refer to light and purity or harmony and infinity. Book I, hymn 2, verse 7 refers to this dyad, "I invoke the Lord of light and infinity. May these faculties dispel the evil forces. May my earnest endeavour attain success through enlightenment and endless dedications."

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्।
धियं घृताचीं साधन्ता।। (Rv. I.2.7)

Mitram huve putadaksam varunam ca risadasam.
dhiyam ghrtacim sadhanta.

Davi Saraswati

Saraswati, in Vedic texts, is the divine speech, the symbolic Goddess of Speech. The Supreme Lord, the bestower of the revealed knowledge to man is also adored as Saraswati in many verses. Litrally, Saraswati refers to the stream, the flowing movement of knowledge, it is the overflowing inspiration in the heart of an aspirant that emerges from his truth-consciousness. In some verses, Saraswati is symbolically associated with seven delights, seven rays, seven mothers and seven seers.

Says the verse, "O divine speech, may you inspire those who delight in truth. May you arouse our creative activities, mental and spiritual. Pray, assist us in our efforts to perform the organized sacred acts. May you set in motion all the energies of our soul and intellect. Assuredly, through you, spring our heart-throbs as prayers to the Merciful God. O Divine Speech, may our chanting of sacred hyms arouse devotion and love for Him and bring forth blessings for us. May we communicate our blissful feelings through your faculty which is the only privilege granted to the humans of earth."

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।। (Rv. 1.3.10)

Pavaka nah sarasvati vajebhir vajinivati.
Yajnam vastu dhiyavasuh..

Let us pray together

"Let us all, O friends and devotees, assemble here and offer our congregational prayer and repeatedly sing the glory of the resplendent Lord" says the verse.

The Lord alone is the inspirer of all noble deeds, the giver of joy, the source of energy for the fulfilment of our aspiration and the bestower of divine bliss.

We applaud the benevolent people; go to their doors who provide us with grain, clothes and the means of livelihood. We thank them. Alas, we forget the Supreme Giver of our life energy, the embodiment of total selfless action and the bestower of true happpiness. While buying an article, we thank the trader who gets his dues, but forget to thank our Lord who provides air, water or sunshine for us and we enjoy the same for our living. Only He has equipped our body with wondrous organs which receive the senses form the Universe.

Friends, there is a force in a sonorous outburst of prayer sung in one tune by countless throats and hearts. So, come to the prayer ground and assemble there all in one concert to sing the songs of the Lord, come floating in spiritual ecstasy like the surging waves of the ocean.

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत।
सखायः स्तोमवाहसः।। (Rv. I. 5.1)

A tv eta ni sidatendram abhi pra gayata.
sakhayah stomavahasah. **- To Be Continue...**

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी हमारी मातृ भाषा

क्रांतिकारी भी चाहते थे कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत की एक मात्र भाषा हिन्दी ही हो

...विदेशियों ने यहां अपनी भाषा अंग्रेजी का दबाव देकर थोपना चाहा फिर भी सफल न हो सके। मैकाले चाहता था कि भले ही अंग्रेंज यहां से चले जाएं परन्तु हमने (अंग्रेजों ने) ऐसा बीज वो दिया है कि यहां सदैव काले अंग्रेज पैदा होते रहेंगे। अंग्रेजों के प्रयत्न विफल हुए आज भारतीय हिन्दी का महत्त्व समझते हैं हिन्दी हमारा गौरव है, प्रत्येक हृदय में हिन्दी के प्रति सम्मान है।...

महापुरुषों ने हिन्दी को विशेष महत्त्व दिया है। क्रांतिकारी भी चाहते थे कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत की एक मात्र भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए। समाज में भारतीय संस्कारों का चलन हो इतिहास से शिक्षा लेकर भविष्य का निर्माण करते रहें।

हिन्दी हमें अपने पूर्वजों के शौर्य से जोड़ती है, भारत के गौरव से जोड़ती है, हिन्दी भारत का गौरव है मैथिली शरण गुप्त, मुंशी प्रेम चन्द, बाल कृष्ण भट्ट जैसे कवि-लेखक, सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी कवियित्रियों ने हिन्दी को महान बताया है। हिन्दी के लिए जीवन समर्पित किया।

हिन्दी हमें अपने राष्ट्र से मिलाती है, देश भक्ति है हिन्दी, हमारे हृदयों में बसी है मन में बसी है। हिन्दुस्तान का हृदय है हिन्दी। अन्य भाषाओं की जननी है हिन्दी। हिन्दी का जितना भी गुणगान किया जाए कम है। जब से विदेशी आए उन्होंने अपनी-अपनी भाषाएं इस देश में थोपनी चाहीं परन्तु आज भी हिन्दी का सम्मान भारतीयों के लिए कम नहीं है बोलने-पढ़ने-लिखने में सुगम व प्राकृतिक है। विदेशियों ने यहां अपनी भाषा अंग्रेजी का दबाव देकर थोपना चाहा फिर भी सफल न हो सके। मैकाले चाहता था कि भले ही अंग्रेंज यहां से चले जाएं परन्तु हमने (अंग्रेजों ने) ऐसा बीज वो दिया है कि यहां सदैव काले अंग्रेज पैदा होते रहेंगे। अंग्रेजों के प्रयत्न विफल हुए आज भारतीय हिन्दी का महत्व समझते हैं हिन्दी हमारा गौरव है, प्रत्येक हृदय में हिन्दी के प्रति सम्मान है।

अंग्रेज चले गये परन्तु कुछ स्त्री-पुरुष पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकने लगे। अंग्रेजी के शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग भी करने लगे। हाय! हैल्लो, बाय, वाय मम डैड जैसे शब्द घरों में प्रवेश कर गये। हैप्पी वर्थ डें क्रिसमस तथा पहनावा भी अंग्रेजियत की ओर मोड़ ले गया क्योंकि हम समझने लगे कि अंग्रेजी से वैज्ञानिक व आधुनिक विकास हुआ है। ऐसी बात नहीं जब अंग्रेज दुनियां में आए थे उस समय खोजें हुई टेलीफोन, टेलीग्राफ, ग्रामोफोन, रेडियो, विद्युत, कारखाने, पक्के मार्ग, रेल, मोटर यान, वायु यान आदि हम समझने लगे यह सब अंग्रेजी से हुआ ऐसी हमारी सोच ठीक नहीं। अंग्रेजी विकास व उन्नति का कारण नहीं रही कभी नहीं। ध्यान दें जितने भी आर्थिक वैज्ञानिक सामाजिक व भौगोलिक विकास में अग्रणी देश हैं दुनिया में सबसे आगे हैं सबसे अधिक विकास वहां हुआ है वहां सब कुछ उनकी अपनी ही भाषा है, रूस, चीन, जापान, इज़राइल, फ्रान्स, अमेरिका आदि में अपनी ही भाषाएं हैं वहां चिकित्सा, इलैक्ट्रॉनिक, भौतिक, रसायन, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र गणित आदि सब उनकी ही भाषा में है। और सबसे आगे हैं। अंग्रेजी से उनका कोई सम्बन्ध नहीं, न पहले था, बसं जब वैज्ञानिक साधनों का आविष्कार हुआ तब हम परतन्त्र थे हमारे मन में अंग्रेजी का दबाव बनाया गया जिसे हम महत्व देने लगे परन्तु उस समय हिन्दी ही पढ़ने-लिखने की व राज कार्य की भाषा होती तो आज हम औरों की अपेक्षा पिछड़े न होते। उनसे भी आगे होते हमें हिन्दी का महत्त्व समझना चाहिए। हिन्दी को ही अपनाना चाहिए यह हमारी मात्र भाषा है।

जब संसार की भाषा संस्कृत थी भारत की सीमाएं दूर-दूर तक थीं हमारे ही संस्कार थे, वेद को हम मानने वाले थे। उस समय विश्व में हमारा ही शासन था हमारे यहां सदैव चक्रवर्ती शासक हुए हैं। चीन का राजा भगदत्त, यूरोप का विदुलाक्ष, अमेरिका का बब्रुवाहन, ईरान का शल्य यहां आज्ञानुसार आते व जाते थे।

हमारे प्राचीन ऐतिहासिक स्थान, संग्रहालयों अभिलेखों में संस्कृत व हिन्दी भाषा ही है। शास्त्र आदि प्राचीन नाटक, कथानक एवं हिन्दी व संस्कृत मं ही हैं। विश्व हिन्दी दिवस पर हिन्दी के प्रयोग का संकल्प लें। हिन्दी में कार्य करें संस्कृत के शब्दों का जीवन में प्रयोग करें।

-डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह,
खुर्जा

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज : अतीत एवं वर्तमान

आर्य सन्देश के पिछले अंक में ''महर्षि दयानन्द और आर्य समाजः अतीत एवं वर्तमान'' लेख में आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्य और उस समय महर्षि द्वारा निर्धारित नियमों के विषय में जानकारी प्राप्त की, लेखक ने उसी श्रृंखला में आगे क्या लिखा आईए उसे जानें-

-सम्पादक

स्वामी जी के अवसान के बाद 5 वर्ष के अन्दर ही आर्य समाजियों में विचार-वैविध्य के कारण अन्तर्विरोध आरम्भ हो गया। परिणामतः पंजाब की आर्य समाजों का एक वर्ग तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आबद्ध रहा तो दूसरे ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के नाम से एक पृथक् संगठन बना लिया। यही स्थिति दिल्ली में बनी हुई है। तथापि दोनों वर्ग कुछ समय तक अपने-अपने ढंग से महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने में लगे रहे। इस कार्य के लिए आर्य समाज ने देश को अनेक उच्च कोटि के उपदेशक, व्याख्याता, शास्त्रार्थ महारथी, उद्भट वैदिक विद्वान् दिये जिन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी, तर्कणा शक्ति और लेखनी से महर्षि के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यह स्थिति देर तक नहीं बनी रही। समय ने करवट ली। आर्य समाज में दलगत राजनीति, क्षेत्रवाद एवं सत्तालोलुपता की प्रवृत्ति ने प्रवेश करना अरम्भ कर दिया। प्रचार-प्रसार का कार्य चन्द उपदेशकों तक ही सीमित रहा। अधिकांश लोग 'अखाड़ेबाजी' में तल्लीन रहे। प्रथम चरण में पंजाब में इसका मुख्य केन्द्र रहा। पंजाब दो राज्यों हरियाणा और पंजाब के रूप में विभक्त हुआ जिसका प्रभाव सभा पर पड़ना स्वाभाविक ही था। काफी जद्दोजहद के बाद पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा तीन सभाओं में बंट गयी-हरियाणा, दिल्ली और पंजाब। जद्दोजहद का प्रमुख कारण सत्तालोलुपता ही था जिसके कारण कोर्ट-कचहरी और मुकदमेबाजी तक की नौबत आ गयी। यहां से शुरू हुई जंग का कुप्रभाव धीरे-धीरे अधिकांशतः प्रान्तों की सभाओं पर पड़ा जिसका परिणाम है कि कई जगह दो-दो समान्तर सभाओं का बनना। दोनों सभाओं के अधिकारी स्वयं को वास्तविक सभा का अधिकारी होने का दावा करते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी इससे अछूती नहीं रही। जिस सभा को प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं या अन्य समाजों के विवाद का निपटारा करने का दायित्व स्वामी जी ने सौंपा था, जब वही विवादों के घेरे में आ जाये तो उसके अन्य सभाओं, समाजों पर नियंत्रण करने की आशा कैसे की जा सकती है। आज यही स्थिति है।

उत्तर प्रदेश तथा अन्य कई राज्यों में दो समान्तर सभाएं बनी हुई हैं तथा उनके अधिकारी अपना वर्चस्व प्रदर्शित करने में लगे हुए हैं। विगत कुछ वर्षों से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी एकाधिक हैं-सभी पक्षों के अधिकारी स्वयं को 'असली सभा' का अधिकारी सिद्ध करने के लिए न्यायालयों की शरण में हैं। इस सबका कुप्रभाव प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, सभाओं एवं आर्य समाज से सम्बद्ध संस्थाओं के कामकाज पर पड़ना स्वाभाविक है। गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बद्ध संस्थाएं इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। इसी अखाड़ेबाजी के कारण गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल फार्मेसी और कन्या गुरुकुल देहरादून पर रिसीवर बैठ गये हैं। साथ ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सभाओं की राजनीति से मुक्त कर सरकार के हवाल करने का षडयंत्र चल रहा है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है और उसके लिए सम्बन्धित पक्षों को इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा। साथ ही इस सबके लिए स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा चीत्कार कर रही होगी। व्यक्ति तो आते-जाते रहते हैं, संस्था को तो बने रहना है, हानि या बदनामी संस्था की ही होती है। आर्य समाज का जो मुख्य कार्य है वैदिक सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों का प्रचार, कुरीतियों का निवारण, शुद्धि, दलितोद्धार आदि, वह बाधित हो रहा है। कारण स्पष्ट है-नेतृत्व का सारा ध्यान कुर्सी-दौड़, प्रतिस्पर्धा में विजयश्री प्राप्त करने में लगा रहता है। महर्षि के मिशन से उसे कुछ लेना-देना नहीं। कैसे कुर्सी हथियाई जाये और उस पर कैसे बना रहा जाये, यही उनकी चिन्ता का विषय होता है। जो इस प्रतियोगिता में सहभागिता से सदा दूर रहते हुए आर्य समाज की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए चिन्तित हैं उनकी संख्या इतनी कम है कि उनकी आवाज 'नक्कारखाने में तूती की आवाज' की तरह निष्फल हो रही है।

इस भयावह स्थिति से विकल विद्वतमण्डल, माननीय संन्यासियों एवं अन्य हितेच्छु आर्यजनों द्वारा समस्या के समाधान के लिए दोनों पक्षों के समक्ष सुझाव रखे जा रहे हैं, पर सब व्यर्थ, क्योंकि इसके लिए निजी स्वार्थों का त्याग करना पड़ेगा जो किसी के लिए संभव नहीं है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एकीकरण के लिए कुछ वर्ष पूर्व एक संचालन समिति बनायी गयी थी, जिसके अध्यक्ष एवं सदस्य आर्य जगत् के जाने माने संन्यासी थे। पर वह भी निष्प्रभावी रही। ऋषि बोधोत्सव, ऋषि निर्वाण दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस आदि पर महर्षि का नाम स्मरण करने तथा गुणगान करने मात्र से ही अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री मानते हैं, आज के अधिकांश आर्यजन। ऋषि द्वारा स्थापित आर्य समाज का वर्तमान और भविष्य क्या होगा, प्रचार सम्बन्धी कार्य जैसा अपेक्षित है, वैसा ही रहा है या नहीं, इसकी किसी को चिन्ता नहीं है। आर्य समाज के कार्य के लिए न तो कोई ठोस कार्य-योजना बनाने वाला है और यदि बन भी जाये तो उसे क्रियान्वित करने में किसी की रुचि नहीं है।

हमें आज याद आते हैं वे ज्ञात-अज्ञात आर्यजन जिन्हें सोते-जागते, उठते-बैठते आर्य समाज के प्रचार की ही चिन्ता थी। उन्हीं लोगों की अनगढ़ नींव के पत्थरों पर आज के आर्य समाज का गौरवशाली स्वरूप अपनी भव्यता के साथ टिका हुआ है। उन्हीं लोगों के त्याग, तपस्या और समर्पण भाव से किया गया भूतकाल का कार्य वर्तमान में आर्य समाज के जीवन का आधार है। पर इसका भविष्य क्या होगा,यह हम सभी के क्रिया कलापों एवं निष्ठा पर आधारित होगा। अतः समय की पुकार है कि आर्य समाज से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए आर्यजन निःस्वार्थ भाव से इसकी सर्वतोमुखी उन्नति एवं महर्षि के साधनों के अनुरूप इसे आगे बढ़ाने के लिए अपना तन-मन-धन समर्पित करने को सन्नद्ध हो जायें और अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए आर्य समाज के भविष्य से खिलवाड़ करने वालों को ऐसा करने से रोकें, भले ही इसके लिए आन्दोलन ही क्यों न करना पड़े। परमात्म हम सबको सद्बुद्धि दे ताकि हम इस दिशा में चिन्तन कर कुछ कर सकें।

-डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार, आर्य विरक्त (वानप्रस्थसंन्यास) आश्रम, ज्वालापुर-हरिद्वार

वेद प्रचार में आप भी बनें भागीदार

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार व भजनोपदेशक मण्डल की नियुक्ति की गई है। भारत के समस्त आर्य समाज भजनोपदेश मण्डल को आमंत्रित कर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने हेतु श्री एस.पी. सिंह जी से संपर्क करें। **संपर्क सूत्रः- 09540040324**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

बोध कथा

जैसा अन्न वैसा मन

भीष्म पितामह शर-शय्या पर लेटे हुए थे। युधिष्ठिर महाराज उनसे धर्मोपदेश ले रहे थे। धर्म की बड़ी गम्भीर और लाभदायक बातें वे कह रहे थे। तभी द्रौपदी ने कहा-''पितामह! मेरा भी एक प्रश्न है। आप आज्ञा दें तो पूछें?'' भीष्म बोले-''पूछो बेटी! तुम भी एक प्रश्न पूछो, मैं उत्तर दूंगा।''

द्रौपदी ने कहा-''महाराज! प्रश्न पूछने से पूर्व क्षमा चाहती हूं। मेरा प्रश्न कुछ टेढ़ा है। बहुत अच्छा न लगेगा आपको। अगर बुरा लगे तो रुष्ट न होना।''

भीष्म बोले-''नहीं बेटा। मैं रुष्ट नहीं होता। तुम जो भी चाहो पूछो।''

द्रौपदी ने कहा- ''पितामह। आपको स्मरण है, जब दुर्योधन की सभा में दुःशासन मुझे नग्न करने का यत्न कर रहा था? मैं रो रही थी, चिल्ला रही थी। आप भी वहां उपस्थित थे। आपसे भी मैंने सहायता की प्रार्थना की थी। आज आप ज्ञान और ध्यान की बड़ी-बड़ी बातें कह रहे हैं, उस समय आपका यह ज्ञान और ध्यान कहां गया था? उस समय एक अबला का अपमान आपने कैसे सहन किया? उसकी पुकार को क्यों नहीं सुना?''

भीष्म बोले-''तुम ठीक कहती हो बेटी! उस समय मैं दुर्योधन का पाप-भरा अन्न खाता था। वह पाप मेरे शरीर में समाया हुआ था, रक्त बनकर मेरी नसों में दौड़ रहा था। उस समय मैं चाहने पर भी धर्म की बात नहीं कह सका। अब अर्जुन के तीरों ने उस रक्त को निकाल दिया है। पर्याप्त समय से मैं शरों की शय्या पर पड़ा हूं। पाप का अन्न शरीर से निकल गया है, इसलिए धर्म की बात कहने लगा हूं।''

यह है अन्न का प्रभाव! जैसा अन्न, वैसा मन। जैसा आहार, वैसा विचार। जैसा अन्न-जल खाइये, तैसा ही मन होय।

जैसा पानी पीजिये तैसी वाणी होय।।

साभार : बोध कथाएं

साप्ताहिक आर्य सन्देश

14 सितम्बर से 20 सितम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17 सितम्बर/ 18 सितम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 सितम्बर, 2015

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न

गंगा प्रसाद जी पुनः प्रधान निर्वाचित

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना में दिनांक 13 सितम्बर 2015 को श्री धर्म पाल आर्य चुनाव पर्यवेक्षक एवं श्री राजीव आर्य चुनाव अधिकारी (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) की उपस्थिति में वर्ष 2015 से 2018 के कार्यकाल के लिए निर्वाचन सम्पन्न हुआ। बैठक की कार्यवाही यज्ञ एवं ध्वजारोहण के पश्चात् प्रारम्भ हुई जिसमें बिहार प्रांत के सभी जिलों के 433 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में श्री गंगा प्रसाद जी को प्रधान पद के लिए निर्विरोध चुना गया तदुपरान्त श्री व्यास नन्दन शास्त्री, मंत्री व श्री सत्यदेव कुमार गुप्ता को कोषाध्यक्ष चुना गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नव निर्वाचित पदाधिकारियों एवं सदस्यों को हार्दिक बधाई।

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :

www.thearyasamaj.org/article

फेसबुक पर हमसे जुड़ें :

margdrashan@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा — चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

स्वास्थ्य चर्चा में स्तम्भ के अन्तर्गत वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक के कुछ अंश आपके स्वास्थ्य जीवन व ज्ञान वर्धन के लिए प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यह पुस्तक दिल्ली आर्य सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। यदि आप इस पुस्तक को प्राप्त करना चाहते हैं तो संपर्क करें-विजय आर्य मो. 09540040339

दमा स्वांस के लिए : 1. पीपल के ताजी पत्ते छाया में सुखाकर कूट छान लें। 5-5 ग्राम गर्म दूध से प्रातः सांय 15 दिन लें।, 2. कपूर, हींग भूनी 10-10 ग्राम पीसकर अदरक रस में मिलाकर चने बराबर गोलियां बना छाया में सुखा लें। एक-एक गोली दिन में तीन बार पानी से लें।, 3. हीराकसीस चने बराबर पानी से लें।, 4. अपामार्ग के बीज चिलम में रख आंच गेर कर इसका धुआं पीयें।

वर चाहिए

आर्य परिवार की सुन्दर, स्वस्थ, संस्कारी गृहकार्य में दक्ष कन्या। अग्रवाल, एरन गोत्र, लम्बाई 5'1'' एम.कॉम्/बी.एड. जन्मतिथि 27 अप्रैल 1986 हेतु। सुन्दर, स्वस्थ, आर्य विचारधारा की मान्यताओं वाला, सर्विसमैन अथवा बिजनेसमैन, वर चाहिए।

सम्पर्क सूत्र

मो. 9837773024

आवश्यकता है

आवश्यकता है पोर्टल एवं इन्टरनेट विशेषज्ञ की जो आर्य समाज द्वारा संचालित पोर्टल की उपयोगिता और उसका विस्तार कर सकने में निपुण हो। आर्य समाजी विचारधारा वाले विशेषज्ञों को प्राथमिकता दी जाएगी। सम्पर्क करें:

संदीप आर्य, मो. 09650183339

गोसम्वर्द्धन जैविक खाद

गोसेवा प्रसाद, महर्षि दयानन्द गोसम्वर्द्धन केन्द्र, गाजीपुर, दिल्ली द्वारा गाय के गोबर एवं गौ-मूत्र द्वारा तैयार जैविक खाद जिसमें केंचुआ एवं मुख्य खनिज पोषक तत्व पर्याप्त एवं संतुलित मात्रा में पाये जाते हैं तथा यह खाद उर्वरकों तथा अन्य जैविक खादों की तुलना में अधिक प्रभावी एवं लाभदायक है।

मूल्य मात्र 15/- प्रति किलो

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक प्रकाशन , 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 या विजय आर्य मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह